नर्रदनिया

मिलावट रोकने में जन सहयोग का अभाव

<section-header><section-header><section-header><section-header><section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header></section-header></section-header></section-header></section-header>	and an application of the second state	permit all a color			1999 B		20 312 1402
<section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header>	L West Ch. and Ch.						EITERE TH
<section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header>			0		में जन स	हयाग व	pi Sivila
<section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header>		31, 10 1000	मिलाव	10 11410	हार्यकाल जागर	to be new serviced	ferere. & aufe er en erten
<section-header><section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header></section-header>	नांद्निया	eft 2 fo ferme es ette de roce are get err er terest	tere a eren ber bate a	केरनी मागानी अदिनारी या " विकास प्रमुख	सम् हेलोलर की स्टिप्स अन्द हे को कार्यक क कर न्यासालक के एक सप्ती	त त्वारो को लिपन है। त लेख करण नवज करने	ti mig en ferer sins web et
<section-header><section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header></section-header>		à fe er spirt a eres	v) 21 gret uttert		it fer mit ette an fairt	uter alle rettere it	the state and the state and
<text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text>	<u>গ্</u> যাথ্যসকলে	trive solar active 3.1 - 1 or wh 2 to Events the solution explore active room 1.1 from the explorement of the 2 formers active in the sol 2 formers active in the sol 2 formers active active active the formers of the active the fo	भाग के जिस्सा करता है। अपराध करता है। उत्तर प्रवार के देख करता करता के उत्तर प्रवार के देख करता के के प्रवार के देख करता के के प्रवार के देख करता के देख करता के के प्रवार के देख करता के देख करता के के प्रवार के देख करता के दिख करता के दिख करता के कि प्रवार के दिख करता के दिख करता के दिख करता के दिख करता के दिख के प्रवार के देख करता के दिख कर के दिख कर के दिख कर के कि प्रायत करता के दिख करता के दिख करता के दिख कर का कि का के दिख कर के के दिख कर के के दिख कर के के के के के के के दिख कर के	रे अर्थात प्रायं का साथ करने तर्गते सा साहे के सा साइस करें के बहुत जगार है पर बन्दून की के प्रायं निर्णाल किसिका साहे की सी, और सीते अर्थेत किसिक सारगी है काफी स्वायं की प्रायं के की की सारगी काफी साथ करना करना की की की सारगी का सारगान के की कर सारगीन्त्री है। किसन प	देशों दिलापरा दिस्से- स्थल स्थाप साथ 51 के अप्रतार के केसर सकती तरंस है और पराये प्रतिकार है और पराये प्रतिकार का प्रवार कार्यकार का प्रवार कार्यकार का प्रवार कार्यकार का प्रवार के किस्स प्रतार कार्य के किस्स कार्य कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य के किस्स कार्य कार्य के किस्स कार्य के कार कार्य कार्य के कार्य के कार्य कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार के कार्य के कार कार कार के कार कार के कार के कार कार कार के कार कार कार कार के कार कार कार के कार	und adversarialite (14 s entry) all factures (14) a stress stress stress stress agent all and factors agent and and factors and and and factors are all and and factors are all and and factors are all and interest and according to the factors	भी का साथ के 17 दि साथ के प्राप्त का प्राप्त का साथ साथ का प्राप्त का साथ का साथ का प्राध्नेपार्ट के साथ के प्राप्त का प्राध्नेपार के साथ की दि आपकों का प्राप्त के दि का कार्टमा का प्राप्त के दि का कार्टमा का पार्ट के साथ की का प्राप्त का साथ का स्वेत्रकार साथ की पार्ट की प्राप्त की स्वेतराज साथमी आप
<section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header>		विकेश आणित्या थ चीला साथ करेंद सीर्वास्टरि के बच का सिंग्ला साथ पाल कि का का का दा की साथ के का का की सीर्वास के की सीर्वास के आपका की कि आपका का की कि का की की की की की की की की की की की की की की की की की की की क	(2) में भारती के रोज मा आपने ह देख की आपने कि लिखा जिलावान में ते हैं। सबस जिलावान हैं का जिस्ता के देख वापर को हैं के जिलांगा के दुसारे प्रदेश का राज्य के लिखा का उन्हों के से प्रदान का राज्य की जिस के प्रदान की जिसावान का क	ता के प्राणं प्राणं का कार्य क तिवारे प्राणं प्राणं का आदित सात के त्यार विकार का किला भी विकारे कार प्राणं किला भी विकारे कार प्राणं कि आदा के भी राज्य का कार प्राप् तिहर में राज्य का कार प्राप् तिहर में राज्य का कार प्राप् किलाने का प्राणाय के सावा किलाने का प्राणाय के सावा किलाने का प्राणाय के सावा	प्रतिकारी की स्वीतृति आधान कुतु आराजाब से आराजा स्वार करने के प्रायता स्वार करने के प्रायता स्वार करने के प्रायता स्वार करने के प्रायता सेन करने के प्रायता के स्वार करने के प्राय के के स्वार करने के प्राय के प्रायता के प्रायता के स्वार करने के प्राय के के स्वार करने के प्राय के के स्वार करने के प्राय के के स्वार करने का प्रायता के स्वार की जावा अस्तार का आता	भी है। इन्हरू महिल प्रमित महिल जावि स्वार करना कहिल मही। यह साथ दिल प्रमार करना हुए के स्वार के साथ कहिल कहिल करना के कही ना कि साथ करना के साथ कहिल कहिल कहिल कहिल कहा का कहिल कहि कहिल कहा का कहिल कहि कहिल कहा का कहिल कहिल कहिल कहा का कहा कहि । अर्थकों कहा	4 (क्रिकेटर हाठ) स्थाप त्याप्त स्थाप के का स्थाप हाये स्थाप तिकास के स्थाप हाये स्थाप तिकास के स्थाप के स्थाप के स्थाप तिकास के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के प्राय होगा के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का स्थाप का स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का स्थाप का स्थाप के स्थाप
<section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header>		भाषा में आयापत है। के किस के जिस प्राप्त कि कि माल के के का के कि माल के का	व हिला में सुवार स्वारण परी कि पाळा जिसेन में भी साई सरें। कि पाल परी के सिंह में कारण के साई में कि साई से में कार करता के अन्य प्रति में पा का कारण के प्रति में पा का कारण के प्रति में का कारण के सिंह में साई के कारण के साई में कार करता की साई में कार करता की साई में कार करता की साई में कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार कार कार करता के साई मान कार कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार कार करता के साई मान कार करता के साई मान कार करता के साई मान करता के साई मान कार करता का कार कार कार करता का कार करता कार करता का कार कार कार करता कार करता कार कार कार कार करता कार करता कार कार कार कार कार कार करता कार करता कार करता का कार कार कार कार कार करता कार करता कार करता कार कार कार करता कार कार कार कार कार कार कार कार कार का	ता ता स्वाप्त पत्र के हिल्ल ताता है। आत प्राप्त हिलान के सीए के पर अप का रिजा के के सीए के पर अप का रिजा के के सीए की की स्वाप्त के सीए की सीए सार्थ के सारफ की किस्पार के सारफ की किस्पार के सारफ की सारफ की का किस्पार की सीए सारफ का सिंह कर सारफ की सारफ का सारफ के सी सारफ का सारफ के सी सारफ का सारफ के सी सारफ का सारफ का सी का सारफ का सारफ की की सारफ का सारफ की की सारफ की सारफ का सारफ की का सारफ का सारफ का सारफ की की सारफ की सारफ का सारफ की की सारफ की सारफ का सारफ का सारफ की की सारफ की सारफ का सारफ का सारफ की का सारफ का सारफ की सारफ का सारफ	मा के प्रभाव स्थाप अपना प्रभाव प्रभाव के प्रभाव भारत प्रभाव प्रभाव के प्रभाव स्थाप प्रभाव के प्रभाव के प्रभाव के प्रभाव के प्रभाव के प्रभाव के	ति से 10 देश पर काम के सुरा राजे के सरकार का स्व सुरा किस्स पर किसारों के सार किसा पर किसारों के सार की कि कि किसा के किसा के सार की किसा की किसा की सार की किसा की किसा की किसा का सुरा की किसा की किसा किसा की किसा की किसा किसा की किसा की किसा किसा की की किसा की किसा की की किसा की	तिता सा स्वाय का अतंतर ता तर है सा सा स
<section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header>		हे क पुरुषा भाषण की म मार्ग्य पा मिल्हों म मेल्स्स की मेल्स्स की मल्लाम के मेल्स्स की	वारणि क सहीत करा है तरका सारी करा के सरकार है के स्वया के सरकार है के स्वया के सरकार है के स्वया के सार के स्वयति सा स्वया किया का स्वया है के सारगत किया का स्वया के स्वया के स्वयति का सार स्वया के स्वया है के स्वयति के स्वया है कि स्वयति सार स्वया के स्वयति के स्वयति सार स्वया के स्वयति के स्वयति सार सार के स्वयति के स्वयति सार के स्वयति के स्वयति सार सार के स्वयति के स्वयति के स्वयति सार सार के स्वयति के स्वयति के स्वयति के स्वयति सार के स्वयति के स्वयति के स्वयति के स्वयति के स्वयति के स्वयति सार के स्वयति के स्व	त की कुलस करने का सान है को क्रांत पर करने हैं। जातन की को साम करने हैं। जातन की को साम करने हैं। जातन की की की कर कर कर करना को की की कर कर कर कर की की की कर कर कर कर की की कर कर कर कर कर की की कर क	पुता के के बात आधेत कर पूर्व करने तर कर हुन के साम पर किंगों की लागिए तर हुन के साम पर किंगों की लागिए तर हुन के साम पर कींगों की लागिए तर कर अलागी का कार्यकर के कारण पर कर कारण का की पर जावा प्रतार का कारण का की कारण का के उनहार हुना पा। बात कारण के उनहार कारणाई के कारणा की आधालक के उनहार हुना पा। बात कारण के से	क स्वतान कुछ दिल्लेगक सरिवार केंग्र के स्वतान पुरसा केंग्र करण हो के करने का स्वतिकार है करने का सरिवार है	के पाते के प्राप्त के किए किया किया । इसेन स्वर्फ कुलाक के किए किया किया । इसेन स्वर्फ कुलाक के किए क्या में का एक किए कि कि किए किए किए कि किए कि प्राप्त के कि किए किए कि किए कि किए कि का स्वर्फ के किए कि कि किए कि किए कि का स्वर्फ के किए कि की किए कि का स्वर्ण का स्वर्फ के किए कि की किए कि स्वर्ण के कि किए का माजा स्वर्ण के कि की बाद स्वरण
<section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header>			All the second	तेन्द्र पत्त		ब मणहू	att all and then the
<section-header><section-header><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header></section-header>		1.0	ता है। सरकार के तेनु पर्य प्रार्थ किया का तब एक करोब प्रार्थ हुई की को सब 15 पर पहल कई है। तेन्द्र पता	t to event feed et et	egel & erer er gres erer b	The state and the	ter b fer aft a great al apert at at an at at at at a sere at at at a sere at
<section-header><text><text><text><text><text><text><text><text></text></text></text></text></text></text></text></text></section-header>		fek Tri	भीर आग्धारियों के संप्रथा थे ज़रूर दिन्दा आहे :	रेस रे किसे की राष्ट्रिकरण हैन के किसे की राष्ट्रिकरण हर, रही बह राष्ट्रिकरण है किसे हर, रही बह राष्ट्रिकरण है		erit gent i neren en gfent fi aneren afent fi bi seren	र हे forsart सा सरकारीय के जीवर का तरह अपरांत है को सरकार के लोग को बांग अग्रेज नहीं है कि को सरकार के रहा को बांग अग्रेज नहीं है कि को सरकार को सरकार का रहेता करों को हुए ही सरकार को सरकार
Vμαρτισμα Annumber An end and and and and and and and and and a		10	r. ert ne fer ba ette	ube unft fel ernet			ten 34 caie er ureftertt et f
VS get/HILG 3: A CHI Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An other State Comparison Marcine Comparison An other State Comparison An othere		the factors and	8 MT 92.4. 140				
Ar weight and the second of th	मन नगरात के नाम	et t	atte ant aister & att	erte al sorel à per ette ter		en al ert fert te	ते ह समीमान का सरकार की बतार
	te der efplette f. tien fit mit ? er	t aft efte untrett i enere a	wert werer & ufte uit ufterte	ALCOUNT & RATET		nt et atte ente	र कोई तील मही किया (बाली देव देव
Arrent and an		of see treat the second set	1 1 8 1 4. 46 REPORT 41			fert	
All constraints of the second		(av av) a seven tendert			erft fo erart fte er une i	me 1	
	un & auset unet atter tett er ferertet et gret erte e greft (averfen 2. wer ere er ert	uft fereft & ett inner & : eret	R. R. BERRES BURNERS			a Marul
which a who an whole the formation of the state of the st	att mefer te art fareit funft arfte. unt ert uber bis mete	aren & great terri statt stat			efert i fortent t. tert		S)0- R
	with a wret to some at menter der seteren ante ante a fert &			int & fe greent ce el !	THE AVE AVENUES AT ATES	1 als 1	- जिल्वेतियाँ
ter für eine ben dem i die eine der eine ber eine eine eine eine eine eine eine ei	faitt all a service a vice advances of and all parts on the la stated	ar are to t				genti /	कसाय

The editorial page of 'Nai Dunia' of 27 June 1975 was like any other day, except that the space for editorial was left blank. The editorial was "censored" using emergency powers. Many other newspapers also carried such blank spaces-sometimes to protest against emergency. Later, leaving blank space was also banned.

In this chapter...

We have seen in the last chapter that the Congress recovered after 1971, but was not the same kind of party. The difference became clear in a series of events between 1973 and 1975 that brought new challenges to India's democratic politics and the institutional balance sought by the Constitution. These developments led to the imposition of 'emergency' in June 1975. Normally, we would associate 'emergency' with war and aggression or with natural disaster. But this 'emergency' was imposed because of the perceived threat of internal disturbance. The Emergency ended as dramatically as it had begun, resulting in a defeat of the Congress in the Lok Sabha elections of 1977.

tre.

In this chapter we focus on this crucial phase in the history of democracy in India and ask some questions that have remained controversial after all these years.

- Why was Emergency imposed? Was it necessary?
- What did the imposition of Emergency mean in practice?
- What were the consequences of Emergency on party politics?
- What are the lessons of Emergency for Indian democracy?



THE CRISIS OF Democratic order

Background to Emergency

We have already studied the changes that were taking place in Indian politics since 1967. Indira Gandhi had emerged as a towering leader with tremendous popularity. This was also the period when party competition became bitter and polarised. This period also witnessed tensions in the relationship between the government and the judiciary. The Supreme Court found many initiatives of the government to be violative of the Constitution. The Congress party took the position that this stand of the Court was against principles of democracy and parliamentary supremacy. The Congress also alleged that the Court was a conservative institution and it was becoming an obstacle in the way of implementing pro-poor welfare programmes. The parties opposed to the Congress felt that politics was becoming too personalised and that governmental authority was being converted into personal authority. The split in the Congress had sharpened the divisions between Indira Gandhi and her opponents.

Economic context

In the elections of 1971, Congress had given the slogan of *garibi hatao* (remove poverty). However, the social and economic condition in the country did not improve much after 1971-72. The Bangladesh crisis had put a heavy strain on India's economy. About eight million people crossed over the East Pakistan border into India. This was followed by war with Pakistan. After the war the U.S government stopped all aid to India. In the international market, oil prices increased manifold during this period. This led to an all-round increase in prices of commodities. Prices increased by 23 per cent in 1973 and 30 per cent in 1974. Such a high level of inflation caused much hardship to the people.

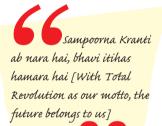
Industrial growth was low and unemployment was very high, particularly in the rural areas. In order to reduce expenditure the government froze the salaries of its employees. This caused further dissatisfaction among government employees. Monsoons failed in 1972-1973. This resulted in a sharp decline in agricultural productivity. Food grain output declined by 8 per cent. There was a general atmosphere of dissatisfaction with the prevailing economic



The best we can hope for is that 1973 will be hataoed quickly



people must have had a tough time. What happened to the promise of garibi hatao?



<mark>A slogan of the </mark>Bihar movement, 1974 situation all over the country. In such a context non-Congress opposition parties were able to organise popular protests effectively. Instances of students' unrests that had persisted from the late 1960s became more pronounced in this period. There was also an increase in the activities of Marxist groups who did not believe in parliamentary politics. These groups had taken to arms and insurgent techniques for the overthrow of the capitalist order and the established political system. Known as the Marxist-Leninist (now Maoist) groups or Naxalites, they were particularly strong in West Bengal, where the State government took stringent measures to suppress them.

Gujarat and Bihar movements

Students' protests in Gujarat and Bihar, both of which were Congress ruled States, had far reaching impact on the politics of the two States and national politics. In January 1974 students in Gujarat started an agitation against rising prices of food grains, cooking oil and other essential commodities, and against corruption in high places. The students' protest was joined by major opposition parties and became widespread leading to the imposition of President's rule in the state. The opposition parties demanded fresh elections to the state legislature. Morarji Desai, a prominent leader of Congress (O), who was the main rival of Indira Gandhi when he was in the Congress, announced that he would go on an indefinite fast if fresh elections were not held in the State. Under intense pressure from students, supported by the opposition political parties, assembly elections were held in Gujarat in June 1975. The Congress was defeated in this election.

In March 1974 students came together in Bihar to protest against rising prices, food scarcity, unemployment and corruption. After a point they invited Jayaprakash Narayan (JP), who had given up active politics and was involved in social work, to lead the student movement. He accepted it on the condition that the movement will remain non-violent and will not limit itself to Bihar. Thus the students' movement assumed a political character and had national appeal.

People from all walks of life now entered the movement. Jayaprakash Narayan demanded the dismissal of the Congress government in Bihar and gave a call for total revolution in the social, economic and political spheres in order to establish what he considered to be true democracy. A series of bandhs, gehraos, and strikes were organised in protest against the Bihar government. The government, however, refused to resign.



A slogan given by D. K. Barooah, President of the Congress, 1974

The Naxalite Movement

In 1967 a peasant uprising took place in the Naxalbari police station area of Darjeeling hills district in West Bengal under the leadership of the local cadres of the Communist Party of India (Marxist). Beginning from the Naxalbari police station, the peasant movement spread to several states of India and came to be referred broadly as the Naxalite movement. In 1969, they broke off from the CPI (M) and a new party, Communist Party (Marxist-Leninist) (CPI-ML), was formed under the leadership of Charu Majumdar. It argued that democracy in India was a sham and decided to adopt a strategy of protracted guerrilla warfare in order to lead to a revolution.

The Naxalite movement has used force to snatch land from the rich landowners and give it to the poor and the landless. Its supporters advocated the use of violent means to achieve their political goals. In spite of the use of preventive detention and other strong measures adopted by the West Bengal government run by the Congress party, the Naxalite



movement did not come to an end. In later years, it spread to many other parts of the country. The Naxalite movement has by now splintered into various parties and organisations. Some of these parties, like the CPI – ML (Liberation) participate in open, democratic politics.

Currently about 75 districts in nine States are affected by Naxalite violence. Most of these are very backward areas inhabited by Adivasis. In these areas the



Charu Majumdar

(1918-1972): Communist revolutionary and the leader of the Naxalbari uprising; participated in the Tebhaga movement before independence; left the CPI and founded the Communist Party of India (Marxist-Leninist); believed

in the Maoist path of peasant rebellion and defended revolutionary violence; died in police custody.

sharecroppers, under-tenants and small cultivators are denied their basic rights with regard to security of tenure or their share in produce, payment of fair wages etc. Forced labour, expropriation of resources by outsiders and exploitation by moneylenders are also common in these areas. These conditions lead to the growth of the Naxalite movement.

Governments have taken stern measures in dealing with the Naxalite movement. Human right activists have criticised the government for violating constitutional norms in dealing

with the Naxalites. Many thousand people have lost their lives in the violence by the Naxalites and the anti-Naxalite violence by the government.





Loknayak Jayaprakash Narayan (JP) (1902-1979): A marxist in his youth; founder general secretary of the Congress Socialist

Party and the Socialist Party; a hero of the 1942 Quit India movement; declined to join Nehru's cabinet; after 1955 quit active politics; became a Gandhian and was involved in the Bhoodan movement, negotiations with the Naga rebels, peace initiative in Kashmir and ensured the surrender of decoits in Chambal; leader of Bihar movement, he became the symbol of opposition to Emergency and was the moving force behind the formation of Janata Party.

The movement was beginning to influence national politics. Jayaprakash Narayan wanted to spread the Bihar movement to other parts of the country. Alongside the agitation led by Jayaprakash Narayan, the employees of the Railways gave a call for a nationwide strike. This threatened to paralyse the country. In 1975, JP led a peoples' march to the Parliament. This was one of the largest political rallies ever held in the capital. He was now supported by the non-Congress opposition parties like the Bharatiya Jana Sangh, the Congress (O), the Bharatiya Lok Dal, the Socialist Party and others. These parties were projecting JP as an alternative to Indira Gandhi. However, there were many criticisms about his ideas and about the politics of mass agitations that he was employing. Both the Gujarat and Bihar

agitations were seen as anti-Congress and rather than opposing the State governments, they were seen as protests against the leadership of Indira Gandhi. She believed that the movement was motivated by personal opposition to her.

Railway Strike of 1974

What would happen when the railways stop running? Not for one or two days, but for more than a week? Of course, many people would be inconvenienced; but more than that, the economy of the country would come to a halt because goods are transported from one part to another by trains.

Do you know that such a thing actually happened in 1974? The National Coordination Committee for Railwaymen's Struggle led by George Fernandes gave a call for nationwide strike by all employees of the Railways for pressing their demands related to bonus and service conditions. The government was opposed to these demands. So, the employees of India's largest public sector undertaking went on a strike in May 1974. The strike by the Railway employees added to the atmosphere of labour unrest. It also raised issues like rights of the workers and whether employees of essential services should adopt measures like strikes.

The government declared the strike illegal. As the government refused to concede the demands of the striking workers, arrested many of their leaders and deployed the territorial army to protect railway tracks, the strike had to be called off after twenty days without any settlement.

Conflict with Judiciary

This was also the period when the government and the ruling party had many differences with the judiciary. Do you remember the discussion about the long drawn conflict between the Parliament and the judiciary? You have studied this last year. Three constitutional issues had emerged. Can the Parliament abridge Fundamental Rights? The Supreme Court said it cannot. Secondly, can the Parliament curtail the right to property by making an amendment? Again, the Court said that Parliament cannot amend the Constitution in such a manner that rights are curtailed. Thirdly, the Parliament amended the Constitution saying that it can abridge Fundamental Rights for giving effect to Directive Principles. But the Supreme Court rejected this provision also. This led to a crisis as far as the relations between the government and the judiciary were concerned. You may remember that this crisis culminated in the famous Kesavananda Bharati Case. In this case, the Court gave a decision that there are some basic features of the Constitution and the Parliament cannot amend these features.

Two developments further added to the tension between the judiciary and the executive. Immediately after the Supreme Court's



Do 'committed judiciary' and 'committed bureaucracy' mean that the judges and government officials should be loyal to the ruling party? decision in 1973 in the Keshavananda Bharati case, a vacancy arose for the post of the Chief Justice of India. It had been a practice to appoint the senior-most judge of the Supreme Court as the Chief Justice. But in 1973, the government set aside the seniority of three judges and appointed Justice A. N. Ray as the Chief Justice of India. The appointment became politically controversial because all the three judges who were superseded had given rulings against the stand of the government. Thus, constitutional interpretations and political ideologies were getting mixed up rapidly. People close to the Prime Minister started talking of the need for a judiciary and the bureaucracy 'committed' to the vision of the executive and the legislature. The climax of the confrontation was of course the ruling of the High Court declaring Indira Gandhi's election invalid.

Declaration of Emergency

On 12 June 1975, Justice Jagmohan Lal Sinha of the Allahabad High Court passed a judgment declaring Indira Gandhi's election to the Lok Sabha invalid. This order came on an election petition filed by Raj Narain, a socialist leader and a candidate who had contested against her in 1971. The petition, challenged the election of Indira Gandhi on the ground that she had used the services of government servants in her election campaign. The judgment of the High Court meant that legally she was no more an MP and therefore, could not remain the Prime Minister unless she was once again elected as an MP within six months. On June 24, the Supreme Court granted her a partial stay on the High Court order – till her appeal was decided, she could remain an MP but could not take part in the proceedings of the Lok Sabha.

Crisis and response

The stage was now set for a big political confrontation. The opposition political parties led by Jayaprakash Narayan pressed for Indira Gandhi's resignation and organised a massive demonstration in Delhi's Ramlila grounds on 25 June 1975. Jayaprakash announced a nationwide satyagraha for her resignation and asked the army, the police and government employees not to obey "illegal and immoral orders". This too threatened to bring the activities of the government to a standstill. The political mood of the country had turned against the Congress, more than ever before.

The response of the government was to declare a state of emergency. On 25 June 1975, the government declared that there was a threat of internal disturbances and therefore, it invoked Article 352 of the Constitution. Under the provision of this article the government could declare a state of emergency on grounds of external threat or a threat of internal disturbances. The government decided that a grave crisis had arisen which made the proclamation of a state of emergency necessary. Technically speaking this was within the powers of the

That is like asking the army to disobey the government! Is that democratic?



The Crisis of Democratic Order



This cartoon appeared few days before the declaration of Emergency and captures the sense of impending political crisis. The man behind the chair is D. K. Barooah, the Congress President.

government, for our Constitution provides for some special powers to the government once an emergency is declared.

Once an emergency is proclaimed, the federal distribution of powers remains practically suspended and all the powers are concentrated in the hands of the union government. Secondly, the government also gets the power to curtail or restrict all or any of the Fundamental Rights during the emergency. From the wording of the provisions of the Constitution, it is clear that an Emergency is seen as an extraordinary condition in which normal democratic politics cannot function. Therefore, special powers are granted to the government.

On the night of 25 June 1975, the Prime Minister recommended the imposition of Emergency to President Fakhruddin Ali Ahmed. He issued the proclamation immediately. After midnight, the electricity to all the major newspaper offices was disconnected. In the early morning, a large number of leaders and workers of the opposition parties were arrested. The Cabinet was informed about it at a special meeting at 6 a.m. on 26 June, after all this had taken place.



have declared Emergency without any recommendation from the Cabinet?

109





Consequences

This brought the agitation to an abrupt stop; strikes were banned; many opposition leaders were put in jail; the political situation became very quiet though tense. Deciding to use its special powers under Emergency provisions, the government suspended the freedom of the Press. Newspapers were asked to get prior approval for all material to be published. This is known as press censorship. Apprehending social and communal disharmony, the government banned Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) and Jamait-e-Islami. Protests and strikes and public agitations were also disallowed. Most importantly, under the provisions of Emergency, the various Fundamental Rights of citizens stood suspended, including the right of citizens to move the Court for restoring their Fundamental Rights.

The government made extensive use of preventive detention. Under this provision, people are arrested and detained not because they have committed any offence, but on the apprehension that they may commit an offence. Using preventive detention acts, the government made large scale arrests during the Emergency. Arrested political workers could not challenge their arrest through habeas corpus petitions. Many cases were filed in the High Courts and the Supreme Court by and on behalf of arrested persons, but the government claimed that it was not even necessary to inform the arrested persons of the reasons and grounds of their arrest. Several High Courts gave judgments that even after the declaration of Emergency the courts could entertain a writ of habeas corpus filed by a person challenging his/her detention. In April 1976, the constitution bench of the Supreme Court over-ruled the High Courts and accepted the government's plea. It meant that during Emergency the government could take away the citizen's right to life and liberty. This judgment closed the doors of judiciary for the citizens and is regarded as one of the most controversial judgments of the Supreme Court.

There were many acts of dissent and resistance to the Emergency. Many political workers who were not arrested in the first wave, went 'underground' and organised protests against the government. Newspapers like the *Indian Express* and the *Statesman* protested against censorship by leaving blank spaces where news items had been censored. Magazines like the *Seminar* and the *Mainstream* chose to close down rather than submit to censorship. Many journalists were arrested for writing against the Emergency. Many underground newsletters and leaflets were published to bypass censorship. Kannada writer Shivarama Karanth, awarded with Padma Bhushan, and Hindi writer Fanishwarnath Renu, awarded with Padma Shri, returned their awards in protest against the suspension of democracy. By and large, though, such open acts of defiance and resistance were rare.

The Parliament also brought in many new changes to the Constitution. In the background of the ruling of the Allahabad High



Court in the Indira Gandhi case, an amendment was made declaring that elections of Prime Minister, President and Vice-President could not be challenged in the Court. The forty-second amendment was also passed during the Emergency. You have already studied that this amendment consisted of a series of changes in many parts of the Constitution. Among the various changes made by this amendment, one was that the duration of the legislatures in the country was extended from five to six years. This change was not only for the Emergency period, but was intended to be of a permanent nature. Besides this, during an Emergency, elections can be postponed by one year. Thus, effectively, after 1971, elections needed to be held only in 1978; instead of 1976.

Controversies regarding Emergency

Emergency is one of the most controversial episodes in Indian politics. One reason is that there are differing view points about the need to declare emergency. Another reason is that using the powers given by the Constitution, the government practically suspended the democratic functioning. As the investigations by the Shah Commission after the Emergency found out, there were many 'excesses' committed during the Emergency. Finally, there are varying assessments of what the lessons of Emergency are for the practice of democracy in India. Let us look at these one by one.

Was the Emergency necessary?

The Constitution simply mentioned 'internal disturbances' as the reason for declaring Emergency. Before 1975, Emergency was never proclaimed on this ground. We have noted that agitations were going on in many parts of the country. Was this reason enough for declaring Emergency? The government argued that in a democracy, the opposition parties must allow the elected ruling party to govern according to its policies. It felt that frequent recourse to agitations, protests and collective action are not good for democracy. Supporters of Indira Gandhi also held that in a democracy, you cannot continuously have extra-parliamentary politics targeting the government. This leads to instability and distracts the administration from its routine task of ensuring development. All energies are diverted to maintenance of law and order. Indira Gandhi wrote in a



us not talk about the few who protested. What about the rest? All the big officials, intellectuals, social and religious leaders, citizens... What were they doing?

Let

Shah Commission of Inquiry

In May 1977, the Janata Party government appointed a Commission of Inquiry headed by Justice J.C. Shah, retired Chief Justice of the Supreme Court of India, to inquire "into several aspects of allegations of abuse of authority, excesses and malpractices committed and action taken in the wake of the Emergency proclaimed on the 25th June, 1975". The Commission examined various kinds of evidence and called scores of witnesses to give testimonies. These included Indira Gandhi who appeared before the Commission but refused to answer any questions.

The Government of India accepted the findings, observations and recommendations contained in the two interim reports and third and final report of the Shah Commission. The reports were also tabled in the two houses of Parliament.

In the name of democracy it has been sought to negate the very functioning of democracy. Duly elected governments have not been allowed to function. ... Agitations have surcharged the atmosphere, leading to violent incidents. ... Certain persons have gone to the length of inciting our armed forces to mutiny and our police to rebel. The forces of disintegration are in full play and communal passions are being aroused, threatening our unity. How can any Government worth the name stand by and allow the country's stability to be imperilled? The actions of a few are endangering the rights of the vast majority.

Indira Gandhi Addressing the nation on All India Radio on 26 June 1975



Mrs. Gandhi's confrontation with the Shah Commission provoked this cartoon when the commission's report was released.

letter to the Shah Commission that subversive forces were trying to obstruct the progressive programmes of the government and were attempting to dislodge her from power through extra-constitutional means.

Some other parties, like the CPI that continued to back the Congress during the Emergency, also believed that there was an international conspiracy against the unity of India. It believed that in such circumstances some restrictions on agitations were justified.

Demolitions in Turkman Gate area, Delhi

Emergency witnessed large-scale displacement of people living in Delhi's poorer localities. The *jhuggi-jhopris* were forcibly relocated in the then barren areas across the river Yamuna. One such affected area was the colonies in Turkman gate. The *jhuggis* of the area were demolished. Hundreds of people of this area were forcibly sterilised. However, many people escaped sterilisation simply because they were able to motivate other people to get themselves sterilised and were rewarded by the grant of title to a piece of land. Thus, while some people became victims of government-sponsored actions, some people managed to victimise others in their desire to legally secure a piece of land, which would safeguard them from arbitrary displacement.

Source: Shah Commission of Inquiry, Interim Report II

Ask your parents or other elders in the family or neighbourhood about their experience during 1975-77. Take down notes on the following:

- Their personal experience of the Emergency.
- Any report of support or opposition to the Emergency in your locality.
- Their participation in the 1977 elections and why they voted the way they did.

Put your notes together and make a collective report on 'Emergency in my city/village.'

The CPI felt that the agitations led by JP were mainly by the middle classes who were opposed to the radical policies of the Congress party. After the Emergency, the CPI felt that its assessment was mistaken and that it was an error to have supported the Emergency.

On the other hand, the critics of the Emergency argued that ever since the freedom movement, Indian politics had a history of popular struggles. JP and many other opposition leaders felt that in a democracy, people had the right to publicly protest against the government. The Bihar and Gujarat agitations were mostly peaceful and non-violent. Those who were arrested were never tried for any anti-national activity. No cases were registered against most of the detainees. The Home Ministry, which is entrusted with the responsibility of monitoring the internal situation of the country, also did not express any concern about the law and order situation in the country. If some agitations had over-stepped their limits, the government had enough routine powers to deal with it. There was no need to suspend democratic functioning and use draconian measures like the Emergency for that. The threat was not to the unity and integrity of the country but to the ruling party and to the Prime Minister herself. The critics say that Indira Gandhi misused a constitutional provision meant for saving the country to save her personal power.

What happened during emergency?

The actual implementation of the Emergency is another contentious issue. Did the government misuse its Emergency powers? Were there excesses and abuse of authority? The government said that it wanted to use the Emergency to bring law and order, restore efficiency, and above all, implement the pro-poor welfare programmes. For this purpose, the government led by Indira Gandhi announced a twentypoint programme and declared its determination to implement this programme. The twenty-point programme included land reforms, land redistribution, review of agricultural wages, workers' participation in management, eradication of bonded labour, etc. In the initial months after the declaration of Emergency, the urban middle classes were generally happy over the fact that agitations came to an end and discipline was enforced on the government employees. The poor and rural people also expected effective implementation of the welfare programmes that the government was promising. Thus, different sections of society had different expectations from the emergency and also different viewpoints about it.



Critics of Emergency point out that most of these promises by the government remained unfulfilled, that these were simply meant to divert attention from the excesses that were taking place. They question the use of preventive detention on such a large scale. We have noted that many prominent political leaders were arrested. In all, 676 opposition leaders were arrested. The Shah Commission estimated that nearly one lakh eleven thousand people were arrested under preventive detention laws. Severe restrictions were put on the press, sometimes without proper legal sanctions. The Shah Commission report mentions that the General Manager of the Delhi Power Supply Corporation received verbal orders from the office of the Lt. Governor of Delhi to cut electricity to all newspaper presses at 2.00 a.m. on 26 June, 1975. Electricity was restored two to three days later after the censorship apparatus had been set up.

Custodial death of Rajan

On 1 March 1976, P. Rajan, a final year student of the Calicut Engineering College, Kerala, was whisked away from the hostel in the early hours along with another student, Joseph Chali. Rajan's father, T.V Eachara Warrior made frantic efforts to trace his son. He met legislators, he petitioned the concerned authorities, he also sought the help of the then Home Minister, K. Karunakaran. As the emergency was proclaimed, issues relating to the citizen's liberty could not be raised in the courts. After the Emergency was lifted, Warrior filed a petition for writ of Habeas Corpus in the Kerala High Court at Ernakulam. From the evidence of witnesses, it became clear that from the hostel, Rajan had been taken to the Tourist Bungalow in Calicut the next day where he was tortured by the police. At a subsequent hearing Kerala government told the High Court that Raian had died in "unlawful police custody", as a result of continuous police torture. The Division Bench of Kerala High Court held that Karunakaran had lied to the Court. K. Karunakaran who had by then become Chief Minister of Kerala, had to resign because of the strictures passed by the High Court.

Source: Shah Commission of Inquiry, Interim Report II

There were other and more serious allegations regarding the exercise of governmental power by people who held no official position. Sanjay Gandhi, the Prime Minister's younger son, did not hold any official position at the time. Yet, he gained control over the administration and allegedly interfered in the functioning of the government. His role in the demolitions and forced sterilisation in Delhi became very controversial.

Apart from the arrests of political workers and the restrictions on the press, the Emergency directly affected lives of common people in many cases. Torture and custodial deaths occurred during the Emergency; arbitrary relocation of poor people also took place; and over-enthusiasm about population control led to cases of compulsory sterilisation. These instances show what happens when the normal democratic process is suspended.

Lessons of the Emergency

The Emergency at once brought out both the weaknesses and the strengths of India's democracy. Though there are many observers who think that India ceased to be democratic during the Emergency, it is noteworthy that normal democratic functioning resumed within a short span of time. Thus, one lesson of Emergency is that it is extremely difficult to do away with democracy in India.

Secondly, it brought out some ambiguities regarding the Emergency provision in the Constitution that have been rectified since. Now, ... death of D. E. M. O'Cracy, mourned by his wife T. Ruth, his son L. I. Bertie, and his daughters Faith, Hope and Justice.

An anonymous advertisement in the Times of India, soon after the declaration of Emergency, 1975. Today is India's Independence Day...Don't Let the Lights Go Out on India's Democracy

An advertisement in The Times, London, 15 August 1975 by 'Free JP Campaign'. 'internal' Emergency can be proclaimed only on the grounds of 'armed rebellion' and it is necessary that the advice to the President to proclaim Emergency must be given in writing by the Union Cabinet.

Thirdly, the Emergency made everyone more aware of the value of civil liberties. The Courts too, have taken an active role after the Emergency in protecting the civil liberties of the individuals. This is a response to the inability of the judiciary to protect civil liberties effectively during the emergency. Many civil liberties organisations came up after this experience.

However, the critical years of emergency brought many issues that have not been adequately grappled with. We have noted in this chapter that there is a tension between routine functioning of a democratic government and the continuous political protests by parties and groups. What is the correct balance between the two? Should the citizens have full freedom to engage in protest activity or should they have no such right at all? What are the limits to such a protest?

Secondly, the actual implementation of the Emergency rule took place through the police and the administration. These institutions could not function independently. They were turned into political instruments of the ruling party and according to the Shah Commission Report, the administration and the police became vulnerable to political pressures. This problem did not vanish after the Emergency.

Politics after Emergency

The most valuable and lasting lesson of the Emergency was learnt as soon as the Emergency was over and the Lok Sabha elections were announced. The 1977 elections turned into a referendum on the experience of the Emergency, at least in north India where the impact of the Emergency was felt most strongly. The opposition fought the election on the slogan of 'save democracy'. The people's verdict was decisively against the Emergency. The lesson was clear and has been reiterated in many state level elections thereafter – governments that are perceived to be anti-democratic are severely punished by the voters. In this sense the experience of 1975 -77 ended up strengthening the foundations of democracy in India.

Lok Sabha Elections, 1977

In January 1977, after eighteen months of Emergency, the government decided to hold elections. Accordingly, all the leaders and activists were released from jails. Elections were held in March 1977. This left the opposition with very little time, but political developments took place very rapidly. The major opposition parties had already been coming closer in the pre-Emergency period. Now they came together on the

eve of the elections and formed a new party, known as the Janata Party. The new party accepted the leadership of Javaprakash Narayan. Some leaders of the Congress who were opposed to the Emergency also joined this new party. Some other Congress leaders also came out and formed a separate party under the leadership of Jagjivan Ram. This party named as Congress for Democracy, later merged with the Janata Party.

The Janata Party made this election into a referendum on the Emergency. Its campaign was focused on the nondemocratic character of the rule and on the various excesses that took place during this period. In the backdrop of arrests of thousands of persons and the censorship of the Press, the public opinion was against the Congress. Jayaprakash Narayan became the popular symbol of restoration of democracy. The formation of the Janata Party also ensured that non-Congress votes would not be divided. It was evident that the going was tough for the Congress.

Yet the final results took everyone by surprise. For the first time since Independence, the Congress party was defeated in the Lok Sabha elections. The Congress could win only 154 seats in the Lok Sabha. Its share of popular votes fell to less than 35 per cent. The Janata Party and



Morarji Desai (1896-1995): Freedom fighter; a Gandhian leader: Proponenet of Khadi, naturopathy and prohibition; Chief Minister of Bombay State; Deputy Prime Minister (1967-1969); joined Congress (O) after the split in the party: Prime Minister from 1977 to 1979—first Prime Minister belonging to a non-Congress party.



in The Times of India 29 March 1977

A cartoonist's reading of who won and what was defeated in the 1977 election. Those standing with the common man include Jagjivan Ram, Morarji Desai, Charan Singh and Atal Behari Vajpayee.

its allies won 330 out of the 542 seats in the Lok Sabha; Janata Party itself won 295 seats and thus enjoyed a clear majority. In north India, it was a massive electoral wave against the Congress. The Congress lost in every constituency in Bihar, Uttar Pradesh, Delhi, Haryana and the Punjab and could win only one seat each in Rajasthan and Madhya Pradesh. Indira Gandhi was defeated from Rae Bareli, as was her son Sanjay Gandhi from Amethi.

But if you look at the map showing the result of this election, you will notice that Congress did not lose elections all over the country. It retained many seats in Maharashtra, Gujarat and Orissa and virtually swept through the southern States. There are many reasons for this. To begin with, the impact of Emergency was not felt equally in all the States. The forced relocation and displacements, the forced sterilisations, were mostly concentrated in the northern States. But more importantly, north India had experienced some long term changes in the nature of political competition. The middle castes from north India were beginning to move away from the Congress and the Janata party became a platform for many of these sections to come together. In this sense, the elections of 1977 were not merely about the Emergency.

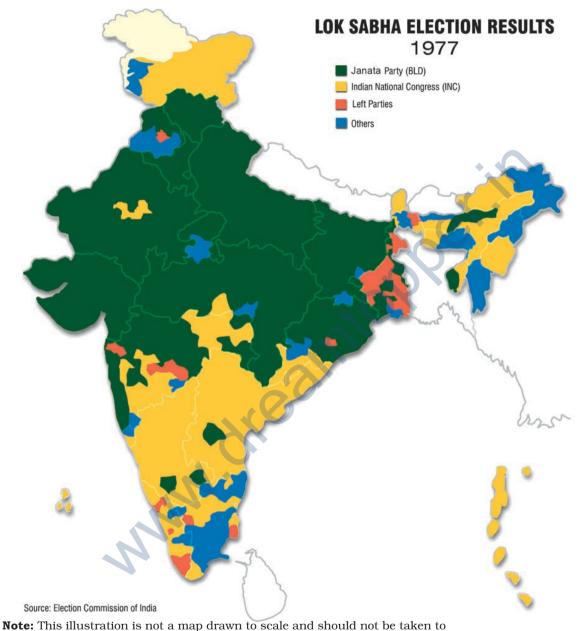
Janata Government

The Janata Party government that came to power after the 1977 elections was far from cohesive. After the election, there was stiff competition among three leaders for the post of Prime Minister – Morarji Desai, who



Oath taking by the first non-congress government at the centre in 1977. In the picture are Jayaprakash Narayan, J. B. Kriplani, Morarji Desai and Atal Behari Vajpayee.

The Crisis of Democratic Order



be an authentic depiction of India's external boundaries.

Read this map and identify the states where

- Congress lost,
- Congress lost very badly and
- those states where Congress and its allies nearly swept the polls.

Which are the constituencies in north India that the Congress managed to win?

How can we talk about a mandate or verdict in 1977 when the north and the south voted so differently?





Chaudhary **Charan Singh** (1902-1987): **Prime Minister** of India between July1979 - January 1980; freedom fighter; active in the politics of Uttar Pradesh; proponent of rural and agricultural development; left Congress party and founded Bharatiya Kranti Dal in 1967; twice **Chief Minister** of U.P.; later he was one of the founders of the Janata Party in 1977 and became **Deputy Prime** Minister and Home Minister (1977-79);founder of Lok Dal.





Janata Party's faction fight inspired many cartoons at that time. Here is a selection.

was the rival to Indira Gandhi ever since 1966-67; Charan Singh, leader of the Bharatiya Lok Dal and a farmers' leader from UP; and Jagjivan Ram, who had vast experience as a senior minister in the Congress governments. Eventually Morarji Desai became the Prime Minister but that did not bring the power struggle within the party to an end.

The opposition to Emergency could keep the Janata Party together only for a while. Its critics felt that the Janata Party lacked direction, leadership, and a common programme. The Janata Party government could not bring about a fundamental change in policies from those pursued by the Congress. The Janata Party split and the government which was led by Morarji Desai lost its majority in less than 18 months. Another government headed by Charan Singh was formed on the assurance of the support of the Congress party. But the Congress party later decided to withdraw its support with the result that the Charan Singh government could remain in power for just about four months. Fresh Lok Sabha elections were held in January 1980 in which the Janata Party suffered a comprehensive defeat, especially in north India where it had swept the polls in 1977. Congress party led by Indira Gandhi nearly repeated its great victory in 1971. It won 353 seats and came back to power. The experience of 1977-79 taught another lesson in democratic politics: governments that are seen to be unstable and quarrelsome are severely punished by the voters.

Legacy

But was it only a case of return of Indira Gandhi? Between the elections of 1977 and 1980 the party system had changed dramatically. Since 1969, the Congress party had starting shedding its character as an umbrella party which accommodated leaders and workers of different ideological dispensations and view points. The Congress party now identified itself with a particular ideology, claiming to be the only socialist and pro-poor party. Thus with the early nineteen seventies, the Congress's political success depended on attracting people on the basis of sharp social and ideological divisions and the appeal of one leader, Indira Gandhi. With the change in the nature of the Congress party, other opposition parties relied more and more on what is known in Indian politics as 'non-Congressism'. They also realised the need to avoid a division of non-Congress votes in the election. This factor played a major role in the elections of 1977.

In an indirect manner the issue of welfare of the backward castes also began to dominate politics since 1977. As we saw above, the results of 1977 elections were at least partly due to a shift among the backward castes of north India. Following the Lok Sabha elections, many states also held Assembly elections in 1977. Again, the northern States elected non-Congress governments in which the leaders of the backward castes played



Jagjivan Ram (1908-1986):

Freedom fighter and Congress leader from **Bihar: Deputy Prime** Minister of India (1977-79); member of Constituent Assembly: also a Member of Parliament since 1952 till his death; Labour Minister in the first ministry of free India: held various other ministries from 1952 to 1977; a scholar and astute administrator.



This cartoon appeared after the election results of 1980.

an important role. The issue of reservations for 'other backward classes' became very controversial in Bihar and following this, the Mandal Commission was appointed by the Janata Party government at the centre. You will read more about this and about the role of the politics of backward castes, in the last chapter. The elections after the Emergency set off the process of this change in the party system.

The Emergency and the period around it can be described as a period of constitutional crisis because it had its origins in the constitutional battle over the jurisdiction of the Parliament and the judiciary. On the other hand, it was also a period of political crisis. The party in power had absolute majority and yet, its leadership decided to suspend the democratic process. The makers of India's Constitution trusted that all political parties would basically abide by the democratic norm. Even during the Emergency, when the government would use extraordinary powers, its use would be within the norms of the rule of law. This expectation led to the wide and open ended powers given to the government in times of Emergency. These were abused during the Emergency. This political crisis was more serious than the constitutional crisis.

Another critical issue that emerged during this period was the role and extent of mass protests in a parliamentary democracy. There was clearly a tension between institution-based democracy and democracy based on spontaneous popular participation. This tension may be attributed to the inability of the party system to incorporate the aspirations of the people. In the two chapters that follow we shall study some of the manifestations of this tension, in particular, popular movements and debates around regional identity.

NNN

Let's watch a Film

HAZARON KHWAISHEIN AISI



Siddharth, Vikram and Geeta are three spirited and socially engaged students. Graduating from Delhi, they follow different paths. While Siddharth is a strong supporter of the revolutionary ideology of social transformation, Vikram is in favour of achieving success in life, whatever the cost. The film narrates the story of their journeys towards their goals and the underlying disappointments.

The film is set in the backdrop of the seventies. The young characters are products of the expectations and idealism of that period. Siddharth is not successful in his ambition to stage a revolution, but is so involved in the plight of the poor that he begins valuing their uplift more than revolution. On the other hand, Vikram becomes a typical political fixer but is constantly ill at ease.

Year: 2005 Director: Sudhir Mishra Screenplay: Sudhir Mishra Ruchi Narain Shivkumar Subramaniam Cast: Kay Kay Menon, Shiney Ahuja, Chitrangada Singh

- 1. State whether the following statements regarding the Emergency are correct or incorrect.
 - (a) It was declared in 1975 by Indira Gandhi.
 - (b) It led to the suspension of all fundamental rights.
 - (c) It was proclaimed due to the deteriorating economic conditions.
 - (d) Many Opposition leaders were arrested during the emergency.
 - (e) CPI supported the proclamation of the Emergency.
- Find the odd one out in the context of proclamation of Emergency
 (a) The call for 'Total Revolution.
 - (b) The Railway Strike of 1974
 - (c) The Naxalite Movement
 - (d) The Allahbad High Court verdict
 - (e) The findings of the Shah Commission Report
- 3. Match the following
 - (a) Total Revolution
 - (b) Garibi hatao
 - (c) Students' Protest
 - (d) Railway Strike
- i. Indira Gandhi
- ii. Jayaprakash Narayan
- iii. Bihar Movement
- iv. George Fernandes
- 4. What were the reasons which led to the mid-term elections in 1980?
- 5. The Shah Commission was appointed in 1977 by the Janata Party Government. Why was it appointed and what were its findings?
- 6. What reasons did the Government give for declaring a National Emergency in 1975?
 - 7. The 1977 elections for the first time saw the Opposition coming into power at the Centre. What would you consider as the reasons for this development?
- 8. Discuss the effects of Emergency on the following aspects of our polity.
 - Effects on civil liberties for citizens.
 - Impact on relationship between the Executive and Judiciary
 - Functioning of Mass Media
 - Working of the Police and Bureaucracy.
- 9. In what way did the imposition of Emergency affect the party system in India? Elaborate your answer with examples.

XERCISES

10. Read the passage and answer the questions below:

Indian democracy was never so close to a two-party system as it was during the 1977 elections. However, the next few years saw a complete change. Soon after its defeat, the Indian National Congress split into convulsions.....David Butler, Ashok Lahiri and Prannoy Roy. — PARTHA CHATTERJEE

- (a) What made the party system in India look like a two-party system in 1977?
- www.dreamiopper.i (b) Many more than two parties existed in 1977. Why then are the authors describing this period as close to a two-party system?
- (c) What caused splits in Congress and the Janata parties?